Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

रामकथा की चित्र परम्परा और दार्शनिक मन्तव्य

Dr. Pradeep Kumar Singh*

President- Hindi Department, Sathaye College (Mumbai Vidyapeeth) Mumbai - Maharashtra

***सार** – भारतीय दर्शन में मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्ग प्रतिपादित किये गये हैं, वे हैं ज्ञान मार्ग, भक्ति मार्ग और कर्म मार्ग। कोई भी साधक या साधारण व्यक्ति अपनी सामर्थ्य शक्ति और सीमा को अच्छी तरह समझकर इन तीनों में से किसी एक मार्ग का चुनाव करता है। भक्तिमार्ग प्राय: आम जनता और सामान्य जनमानस का मार्ग माना जाता है। इसलिए मोक्ष प्राप्ति के लिए भक्ति का मार्ग अपेक्षाकृत आसान और सर्वसुलभ माना जाता है। रामकथा की चित्र परंपरा को हम इसी भक्तिमार्ग से जोड़ सकते हैं। चित्रकार कामन्तव्य जहाँ अपनी चित्रकला विषयक ज्ञान और उत्कृष्टता का प्रदर्शन है, वहीं दूसरी ओर वह ईश्वर भक्ति के मार्ग का अनुसरण करता हुआ भी दिखाई पड़ता है।*

---------------------------------X---------------------------------

रामकथा ई.पू. की सदियों से भारतीय लोकमानस एवं सचेतस सर्जकों के चित्र में निवास करती चली आ रही है। 'वाल्मीकि रामायण' एवं भवभूति कृत 'उत्तररामचरितम्' के ऐसे साक्ष्य हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि रामकथा का चित्रांकन भित्तिचित्रों के रूप में होता रहा है। 'वाल्मीकि रामायण' के युद्धकांड के अंत में एक श्लोक आता है। इस श्लोक के अनुसार रामकथा से सम्बन्धित चित्र राम के समय में भी थे।

यहाँ सीताहरण का एक सुंदर चित्र राम के अन्तःपुर में है। रावण सीता का नृशंसतापूर्वक हरण करके ले जा रहा है और सीता विलाप कर रही हैं। इसका मार्मिक चित्र अंकित है। इस चित्र को देखकर राम अत्यंत आनंदित होते हैं।चित्र की यह टिप्पणी काव्यानुभूति के साधारणीकरण के सिद्धांत को व्यंजित करती है।यद्यपि राम के जीवन का मार्मिक प्रसंग यहाँ चित्रित किया गया है, फिर भी वह देशकाल सर्जित विषय निरपेक्ष चित्र दृश्य, सर्वसाधारण का बन जाता है। राम -सीता तो इस दृश्य में संकेतमात्र हैं।

ठीक इसी प्रकार का एक संदर्भ भवभूति कृत 'उत्तररामचरितम्' में आता है। राम, सीता, लक्ष्मण को अयोध्यानगरी में इसलिए बुलाते हैं कि किसी चित्रकार द्वारा अंकित भित्तिचित्रों को आकर राम-सीता देखें। चित्र इतने सजीव है कि राम-सीता ही नहीं स्वयं लक्ष्मण भी उन्हें देखकर अभिभूत हो उठते हैं।

चित्रकार द्वारा अंकित रचना कुशलता, सजीवता, रूप-रचना एवं विविध रामकथा से जुड़े प्रसंगों को राम-सीता एवं लक्ष्मण देखते हैं और भावोदिक्त हो उठते हैं। इस चित्र संदर्भ को पूरी कुशलता के साथनाटककार, भवभूति रामकथा के घटित होनेवाले भावी संदर्भों से जोड़ देते हैं। इसमें विश्वामित्र द्वारा अजेय द्विव्यास्त्र के दान का प्रसंग, गर्भिणी सीता के पुत्रों के प्राप्त होने का वरदान है। चित्रकला एवं नाट्यकला -दोनों विधाओं के सम्मिलन का यहाँ अद्भुत प्रसंग है। शिष्ट सर्जनात्मक साहित्य के इन साक्ष्यों से स्पष्ट है कि चित्रकला को काव्य रचना के सर्जन संदर्भ से जोड़कर दोनों की पारस्परिक कला संगतियों के बीच सामंजस्य का कार्य ई. पू. पाँचवीं शती से ही प्रारम्भ हो चुका था।

प्रचलन में रामकथा की छः चित्र शैलियाँ अधिक विख्यात रही हैं। प्रथम है - रामकथा चित्रों की बुंदेलखंडी शैली, द्वितीय है- रामकथा चित्रों की राजस्थानी शैली, तृतीय है-रामकथा चित्रों की मुगल शैली, चैथी है- राम चित्रकला की केरली शैली,पाँचवीं है- रामकथा चित्रों की पूर्वोत्तरी शैली और छठी है- उत्तरी पहाड़ी शैली। यह प्रकरण श्रेष्ठ चित्रकलाओं की अन्वितियों से सम्बद्ध है और बारहवीं शती से इन की शुरुआत मानी जा सकती है।इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

राम चित्रकथा की बुंदेलखंडी शैली - बुंदेलखंडी राम चित्रकला की शैलियों के कई उपभाग उसके विविध क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं। जैसे, मालवा शैली, अजयगढ़ और दतिया शैली आदि,किन्तु इनको बुंदेलखंडी शैली के रूप में ही स्वीकृति मिलती है।इस बुंदेलखंडी शैली में 'वाल्मीकि रामायण' तथा 'रामचरितमानस' पर आधारित चित्रकथाओं की संख्या अधिक है और इनको देखने से लगता है कि ये दो ही इस चित्रकला रचना के प्रेरणास्त्रोत रहे हैं। 19 वीं सदी में राजा बलवन्त सिंह

www.ignited.in

जूदेव द्वारा निर्मित इसी बुंदेलखंडी शैली में 'रामचरितमानस' के सत्तर चित्रों का निर्माण कराया गया था, जो इस संदर्भ में नितांतप्रसिद्ध है। सन् १९४२ में ओरछा राज्य की महारानी हीरादेवी ने 'रामायण' के कई चित्र बनवाये थे और उन्हीं की प्रेरणा 'वाल्मीकि रामायण' का चित्रवीथि काव्य बनकर सामने आया था। बुंदेलखंडी शैली कीमालवा वीथिका, राम चित्रकथा परम्परा में विशेष स्थान रखती है।इस चित्रकला शैली के अनेक सुंदर चित्र बनारस कला भवन में सुरक्षित आज भी हैं।

रामकथा चित्रों की राजस्थानी शैली

राम चित्रकला की राजस्थानी शैली परम्परा में नितांत प्रचलित रही है।इस संदर्भ में मेवाड़ के राजा जगत सिंह को बड़े सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है, जिन्होंने सर्वप्रथम सन् १६५२ में वाल्मीकि रामायण के युद्धकांड से सम्बद्ध चित्रों को बनवाया था।ये चित्र आज भी ब्रिटीश म्यूजियम लाइब्रेरी, लंदन में सुरक्षित हैं। इनके द्वारा बनवाये गये राम चित्रकथा के संदर्भ, मेवाड़ी शैली के अतिरिक्त किशनगढ़ शैली, जयपुर शैली, बीकानेर शैली, कोटा शैली, बूंदी शैली आदि राजस्थान में रामकथा की चित्रवीथिका रचना के लिए नितांत प्रसिद्ध रही है।

राजस्थान के लघुचित्रों में चित्रित रामकथा के चित्र नितांत प्रसिद्ध रहे हैं।राजस्थान की पड़ कला (वस्त्रों पर चित्रित लघुचित्र कथा) अत्यंत प्रसिद्ध रही हैऔर पारम्परिक रूप से भोपा नामक जाति इस कार्य को सदियों से करती आ रही है। रामकथा के गायक इन भोपा जाति के पट चित्रकारों से रामकथा का चित्रित वस्त्र खरीदकर, विदेशों में जाकर रामकथा का निरंतर गायन करते रहते हैं।[1]

रामकथा चित्रों की मुगल शैली-

'वाल्मीकि रामायण' से संबद्ध रामकथा की चित्रवीथिकाओं को निर्मित कराने में मुगल बादशाहों का सबसे बड़ा योगदान रहा है।यह तथ्य इतिहास प्रसिद्ध है कि सन् १५८५ में बादशाह अकबर के आदेश पर अब्दुल कादिर बदायूंनी ने रामकथा से संबद्ध १७८ चित्रों को बनाया था। इसी प्रकार रामकथा के महत्व को स्वीकार करते हुए अब्दुल रहीम खानखाना ने इससे सम्बद्ध १३३ चित्रों को बनवाया था। इन दोनों चित्रवीथियों में से अकबर के चित्र अमेरिका तथा अब्दुल रहीम खानखाना के चित्र फ्रीर गैलरी, वाशिंगटन में संरक्षित हैं।[2] इस चित्रवीथी परम्परा के रामकथा चित्र नितांत प्रसिद्ध रहे हैं।

राम चित्रकला की केरल शैली-

केरल में राम चित्रकला की वीथिकाएँ सन् १४५३ से ही ताड़पत्रों पर रची जानी शुरू हो गई थीं। यह कृति ९८ फोलियो की है और इन फोलियो के अन्तर्गत अधिकतम चार- चार चित्र हैं। यह कृति सन् १९३४ में तिरुअनन्तपुरम् में प्राप्त हुई थी। इस कृति के अन्तर्गत कुल ३१८ चित्र हैं।३ यह कृति केरल के विश्वविद्यालय तिरुअनन्तपुरम् से Ramayan in palmleaf pieturess-chitra Ramayan के नाम से प्रकाशित है। इसके संपादक डॉ. के. के. विजयन हैं। केरल मेंचित्र रामायण की एक लम्बी परम्परा वर्तमान है। राम चित्रकथा की पूर्वोत्तर भारतीय शैलियाँ-

'रामचरितमानस' के व्यापक प्रचार-प्रसार होने के बाद रामकथा से सम्बद्ध सम्पूर्ण रामायण की चित्रवीथिकाओं को बनाने की एक नयी परम्परा स्थापित हुई। काशिराज महीपनारायण सिंह ने सन् १८५१ में अनेक लाक्षणिक मुद्राओं में रामकथा से संबद्ध चित्रवीथिकाएँ निर्मित करायीं थीं। जिसका नाम 'चित्र रामायण' रखा गया है। इस 'रामायण'' की प्रतिलिपि काशिराज रामायण पुस्तकालय- वाराणसी में सुरक्षित है। 'रामचरितमानस' पर निर्मित प्रथम चित्र की प्रति सन् १७७१ की बतायी जाती है, जो राजकीय पुस्तकालय, इलाहाबाद में आज भी सुरक्षित है।

रामकथा से सम्बद्ध चित्र 'रामायण' की एक पृथक् प्रति वैशाली में सुरक्षित है। इस प्रति में कुल १५३ चित्र बने हुए हैं।बाँस के कागज पर काली स्याही से लिखी हुई यह प्रति श्री शारदा सदन पुस्तकालय, लालागंज -वैशाली (बिहार) में आज भी सुरक्षित है।यह चित्रकथा 'रामचरितमानस पर आधारित है।

'रामचरितमानस' से सम्बद्ध एक चित्र श्रामायणश् की प्रति श्री उदयशंकर दुबे ग्राम -पोस्ट, समरिया, जिला- मिर्जापुर, के पास है जो पूरी तरह से भारतीय शैली पर आधारित है। गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' की अनेक खंडित चित्र प्रतियों के उल्लेख मिलते हैं, जिनका संकलन विद्वानों के लिए अपेक्षित है।अट्ठारवीं सदी के बाद की रामकथा सम्बन्धी चित्रात्मक प्रतियाँ 'रामचरितमानस' से ही अधिक सम्बद्ध दिखायी पड़ती हैं।

राम चित्रकथा की पहाड़ी शैलियाँ-

रामलीलाओं के अत्यधिक प्रचार-प्रसार के कारण पहाड़ी, विशेषकर नेपाल से लेकर उत्तरांचल के क्षेत्रों में रामकथा चित्र प्रचलित रहे हैं।श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय तथा राजहंस महिला विश्वविद्यालय जालंधर, की वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. नीलम अरुण ने अपने शोध प्रबन्ध- रामकथारू मध्य कालीन,लघु

चित्रकला और काव्य के अन्तर्गत व्यापक रूप से पहाड़ी शैलियों में चित्रित रामकथा चित्र वीथिकाओं का परिचय देते हुए विश्लेषण किया है।इस संदर्भ में काँगड़ा, बसोहली, चम्बा, मंडी, नूरपुर आदि में प्रचलित काँगड़ा तथा गुलेर शैली की रामचरित्र वीथिकाओं का विवेचन तथा विश्लेषण, निश्चित ही सर्वथा प्रामाणिक और ऐतिहासिक साक्ष्य हैं।इस शैली के अन्तर्गत रामकथा के विविध प्रसंगों का भिन्न-भिन्न रूपों में चित्रांकन मिलता है।

रामकथा से सम्बद्ध वाल्मीकि रामायण गोस्वामी तुलसीदास कृत श्रामचरितमानस एवं रामकथा से संबंधित अन्य लोकविश्रुत कृतियों के अतिरिक्त लोक जीवन में जीविकोपार्जन, आमोद-प्रमोद एवं भक्ति- तीनों सन्दर्भो में लघु व्यावहारिक चित्रवीथिका शैलियों की संपूर्ण भारत में व्यापक परम्परा रही है। आज धीरे -धीरे इस दिशा में ज्ञान प्राप्त करने का समाज को अवसर मिल रहा है। मिथिला जनपद की मधुबनी शैली, पश्चिम बंगाल की पटुआ शैली, राजस्थान की पड़ चित्रकला शैली, महाराष्ट्र की चित्रकथा शैली, चेरियाल के पटम् चित्र, उड़िया के पट्ट चित्र, बुंदेलखंड के लघुचित्र, राजस्थान के लघुचित्र, आन्ध्रप्रदेश की कलमकारी रेखाओं, में रची गई रामायणे आदि संपूर्ण भारत के विभिन्न प्रदेशों के लोकमानस से जुड़ी राम चित्रवीथिका को अंकित करने वाली प्रणालियाँ आज भी जीवित हैं, जो कागज, पत्रों, वस्त्रों आदि पर रामकथा के छोटे- छोटे विस्मयकारी चित्रों की रचना करके न केवल अपनी आजीविकाएँ चलाती हैं, अपितु रामकथा से सम्बद्ध भक्ति की भावना का लोक में संचार भी करती हैं।[4]

इस प्रकार हम देखते हैं कि दर्शन की भक्तिमार्गीय भावना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम चित्रकलाएँ भी हैं।दरअसल आध्यात्मिकता भारत के कण-कण में विद्‌यमान है और भक्ति उस आध्यात्मिकता को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है।हमारे यहाँ आजीविका के साधन और लोकरंजन के माध्यम भी भक्ति से जुड़ जाते हैं और यही भारतभूमि की श्रेष्ठता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. देश की पारम्परिक लोकचित्र शैलियों में रामकथा- ले.बसन्त निरगुणे, प्रकाशक -अयोध्या शोध संस्थान, फैजाबाद। पृष्ठ- ५५

2. रामायण का काव्यमर्म (परिशिष्ट) ले. नर्मदाप्रसाद उपाध्याय। पृष्ठ-२०८

3. भारतीय भाषाओं में रामकथा (देखिए-एन, जी, देवकी का लेख)प्रकाशक-अयोध्या शोध संस्थान,फैजाबाद।

4. देश की पारम्परिक लोकचित्र शैलियों में रामकथा, संपादक-बसन्त निरगुणे, प्रकाशक -अयोध्या शोध संस्थान, फैजाबाद।

Corresponding Author

Dr. Pradeep Kumar Singh*

President- Hindi Department, Sathaye College (Mumbai Vidyapeeth) Mumbai - Maharashtra

www.ignited.in